Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, JULY-AUG, 2018, VOL- 6/46

ज्यां पाल सार्त्र के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता

{The relevance of the educational philosophy of Jean Paul Sartre}

सुभाश सिंह, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा भास्त्र विभाग, रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी

नैक द्वारा "ए" ग्रेड प्राप्त

Abstract

प्राचीन काल से ही विश्व के उच्चकोटि के दार्शनिकों ने समाज को अपने–अपने विचारों से प्रभावित किया है और शिक्षा के संबंध में भी अपने विचार प्रकट किये हैं। ऐसे ही बीसवीं सदी के चर्चित दार्शनिक है ज्यॉ पाल सार्त्र। ज्यॉ पाल सार्त्र बीसवीं भाताब्दी के तेजस्वी विचारको में गिने जाते हैं। इनका जन्म 21 जून ,1905 को एवं मृत्यु 15 मई , 1980 को हुई। ज्यॉ पाल सार्त्र अस्तित्ववाद के प्रारम्भिक विचारकों में से माने जाते हैं। वह बीसवीं सदी में फांस के सर्वप्रधान व तेजस्वी दार्शनिक कहे जाते है। कई बार उन्हें अस्तित्ववाद के जनक के रूप में भी देखा जाता है। प्रस्तुत भाोध पत्र बीसवीं सदी के इसी महान दार्शनिक ज्यॉ पाल सार्त्र पर केन्द्रित है। ज्यॉ पाल सार्त्र के विशय में सटीक जानकारी प्रदान करने के उद्दे" य को लेकर यह आलेख लिखने का मेरा अल्पप्रयास है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

ज्यॉ पाल सार्त्र (21 जून,1905–15 मई,1980)

जीवन परिचय (Life Sketch) :

ज्यॉ पाल सार्त्र एक फ्रांसीसी अस्तित्ववादी दार्शनिक, नाटककार, उपन्यासकार, चलचित्र के लिए कथानक लिखनेवाला, राजनैतिक कार्यकर्ता, जीवनी लेखक और साहित्यिक आलोचक थ। सार्त्र का जन्म 21 जून, 1905 को पेरिस में हुआ। सार्त्र 1934 में बर्लिन के फ्रेन्च इंस्टीट्यट में एक वर्श रहकर जर्मन

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दर्शन का गहन अध्ययन किया। उन्होंने कई वर्शों तक अध्यापन कार्य भी किया। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान सार्त्र फॉसीवादी हमलावरों की कैद में रहे और छूटने के बाद उन्होंने प्रतिरोध आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। कालान्तर में वे पूरी तरह लेखन कार्य में जूट गये। यद्यपि समय–समय पर उन्होंने जनता की मुक्ति के समर्थन में राजनीतिक कार्यवाईयों में भाग लिया। उन्होंने प्रसिद्ध फ्रांसीसी पत्रिका "लेंस टेंप्स मॉर्डनेस" का संपादन भी किया। सार्त्र को वैसे तो अस्तित्ववादी दा" र्शनिक के रूप में जाना जाता है और इस दृश्टि से उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य भी किया था। लेकिन अंततः उन्होंने अपने को मार्क्सवादी घोशित किया। उनका विचार था कि अस्तित्ववाद और कुछ नहीं मार्क्सवाद का ही अंतःक्षेत्र है। बताते चले कि सार्त्र के समय मार्क्सवाद विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचार धारा के रूप में उफान पर थी।

सार्त्र सिर्फ विचारक ही नहीं थे बल्कि इस सदी के महान साहित्यकारों में सुमार थे। उनके उपन्यासों और नाटकों ने फ्रांस के बाहर भी व्यापक लोकप्रियता अर्जित की। 'नाउसिया' (Nausea-उबकाई) उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। इसके अलावा उपन्यासों के क्रम में 'दि एज़ ऑफ रिजन'(The age of Region) , 'दि रिप्राइव' (The Reprieve) ,आईरन इन दि सॉउल'(Iron in the Soul) प्रमुख है। उनके 'लेस माउचेस', 'लेस मेन्स सेल्स',निक्रासोव नामक नाटक भी काफी लोकप्रिय हुए। उनकी दा" र्शनिक कृतियों में 'बींग एण्ड नथिंगनेस'(Being and Nothingness)को वि" ाश्ट स्थान हासिल है। 'दि वर्डस'(The Words) नाम से उन्होंने अपनी बचपन की स्मृतियों को प्रस्तुत किया है। जॉन पाल सार्त्र को उनके महान साहित्यिक अवदान के लिए नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया था, लेकिन उन्होंने उसे लेने से इन्कार कर दिया था। 15 अप्रैल, 1980 को 75 वर्श की आयु में उनका महाप्रयाण हुआ।

दा"र्शनिक चिन्तन (Philosophical Thinking) :

ज्यॉ पाल सार्त्र के विचार अपने पूर्ववर्ती अस्तित्ववादी दा" र्शनिकों से अपेक्षाकृत अधिक स्पश्ट एवं सुलझे हुए हैं। इसका एक कारण यह भी है कि सार्त्र ने बस *मानव अस्तित्व* तक ही अपने विचारों कों सीमित रखने का प्रयास किया। ऐसा लगता है कि इसका मूल कारण यह है कि सार्त्र ने प्रारम्भ में अपने अस्तित्ववादी विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम साहित्य एवं नाटक को बनाया। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक आदि के द्वारा अपने विचारों को प्रस्तुत करने की चेश्टा की। उनके नाटकों का मंचन भी हुआ, जिससे उनके दार्शनिक विचार सबके मन में मूर्त रूप प्राप्त कर सके। इन सबका प्रबल प्रभाव पड़ा। उनके विचारों की नवीनता एवं मौलिकता से लोग प्रभावित तो हुए ही साथ में यह भी हुआ कि उन विचारों में लोगों को अपने आत्म–अस्तित्व की झलक मिलने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जब उनकी मूल दार्शनिक कृति बींग एण्ड नथिंगनेस (Being and Nothingness) का 1943 में प्रका" ान हुआ तो लोगों ने इसका बढ़–चढ़ कर स्वागत किया क्योंकि लोगों को ऐसा लगा कि जिन विचारों से वे प्रभावित हो चुके हैं उन विचारों को इस पुस्तक में अब एक दार्शनिक परिवेश मिलगया है। अब यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि अस्तित्ववाद को लोकप्रिय बनाने का सर्वाधिक श्रेय ज्यॉ पाल सार्त्र को ही है। सार्त्र ने आधुनिकता की प्रवृत्तियों को समझा तथा यह भी स्पश्ट रूप में देखा कि आज का मानव उन प्रवृत्तियों की ओर किस रूप में संवेदन" ाील है।

ज्यॉ पाल सार्त्र ने अपने ग्रन्थ इक्जिसटेन्सलिज्म (Existentialism) में कहा है कि अस्तित्ववाद अनी" वर और अनास्थात्मक सह–जीवन परिस्थितियों के परिणामों को प्रस्तुत करने के प्रयास के सिवाय और कुछ नहीं है। ज्यॉ पाल सार्त्र के दार्शनिक विचार को कुछ यॅू समझा जा सकता है–

1–अस्तित्व के बाद सारतत्व आता है।

(Existence precedes essence)

2–मेरा अस्तित्व है इसलिए मैं सोचता हॅू।

3–किसी विशिश्ट वस्तु होने के पूर्व सबसे पहले उसका अस्तित्व है।

4–मनुश्य का अस्तित्व स्वीकार करने के लिए उसे चयन करने वाला अभिकरण मानना आव" यक होता है।

5–मनुश्य को क्या बनना है इसका चुनाव करने के लिए वह पूर्णतया स्वतंत्र है।

6–मनुश्य केवल चेतन प्राणी ही नहीं है अपितु अद्वितीय रूपेण वह आत्मचेतना से युक्त है। अतः वह केवल विचारा ही नहीं करता अपितु विचार के बारे में भी विचार कर सकता है।

अस्तित्ववाद की अवधारणा (Concept of Existentialism) :

अस्तित्ववाद को साधारणतः वि" व के मतों और कार्यपद्धतियों के प्रति विरोध कहा जा सकता है, जिनके कारण मानव पूर्व प्रचलित ऐतिहासिक भाक्तियों के हाथों असहाय कठपुतली माना जाता है अथवा पूर्णतः प्राकृतिक प्रक्रिया के सतत् प्रवाहक्रम द्वारा निश्चित होता है। दरअसल अस्तित्ववाद दर्शन/चिन्तन का वह रास्ता है, जो सम्पूर्ण पार्थिवज्ञान का उपयोग करता है और उसे उसी क्रम में परिवर्द्धित करता है, जिससे मानव पुनः स्वयं वैसा बन सके।

अस्तित्ववाद उन परम्परागत तर्कसंगत दार्शनिक मतवादों के विरूद्ध एक विद्रोह सा है, जो विचारों अथवा पदार्थ जगत की केवल तर्कसंगत व्याख्या करते हैं और मानवीय सत्ता की समस्याओं की

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपेक्षा करते हैं। बिना उत्तरदायित्वों से घबराये, हर सम्भावनाओं को वरण के मानदण्ड पर नापते हुए उनकी चरितार्थता के लिए संकल्पित होकर निरन्तर अपने वास्तविक अस्तित्व के अन्वेशण का प्रयत्न ही सच्चा अस्तित्ववाद है। अस्तित्ववाद व्यक्तिगत जीवन या अस्तित्व का दर्शन है। यह उस व्यक्ति की स्थिति को समझने का प्रयत्न है, जो वास्तविक अर्थों में स्वतंत्रता का उपभोग करते हुए अपने जीवन दशा का स्वयं निर्धारण करना चाहता है और अपने कर्मों के लिए स्वयं पूरी जिम्मेदारी के साथ जीवन यापन करता या करना चाहता है।

आस्तिक व नास्तिक अस्तित्ववाद :

आस्तिक अस्तित्ववादियों को ई" वर के अस्तित्व में अटूट वि" वास रहता है, जबकि नास्तिक अस्तित्ववाद पूर्ण संगति के साथ यह घोशणा करता है यदि ई" वर का अस्तित्व नहीं है तो भी एक सत्ता ऐसी है, जिसका अस्तित्व सत्य से पहले आता है और जो अपनी किसी भी धारणा द्वारा समझाए जाने से पूर्व से ही मौजूद है। दरअसल अस्तित्व सत्य से पूर्व आता है, इसका हम क्या अर्थ लगाते है? हम समझते हैं कि सबसे पहले मनुश्य का अस्तित्व है फिर वह स्वयं अपने से संघर्श करता है और वि" व में अपनी जगह तला" ाता है। तत्प" चात वह अपने को परिभाशित करता है। सार्त्र कहते हैं कि यदि मनुश्य परिभाश्य नहीं है तो इसका कारण है कि आरंभ में वह कुछ भी नही था। बाद में भी वह कुछ नहीं होगा और वह वही बनेगा जैसा वह अपने को बनाना चाहेगा। इसलिए मानव प्रकृति जैसी कोई चीज नहीं है क्योंकि इसकी धारणा बनाने के लिए कोई ई" वर नहीं है। सीधी बात यह है कि मनुश्य हैं। वह अपने बारे में जैसा सोचता है, वैसा नहीं होता बल्कि वैसा होता है जैसा वह संकल्प करता है।

सार्त्र की नास्तिकता (Sartre's Impiety):

वस्तुतः नास्तिकता सार्त्र के अस्तित्ववादी दृश्टिकोण की मान्यता है। सार्त्र को मानव की व्याख्या में मानव–अनुभूति अथवा मानव–चेतना से बाहर आने की आव" यकता ही प्रतीत नहीं होती। उनके अनुसार विचार का प्रारम्भ जन्म के साथ नहीं होता, सच पूछा जाय तो विचार की भाक्ति के पनपने के बहुत पहले व्यक्ति को आत्म–अस्तित्व की चेतना हो आती है। अतः हर प्रकार का विचार यानि ई" वर विचार भी इस चेतना के बाद, इसी के अनुरूप सर्जित होता है। इस लिए सार्त्र के अनुसार कहा जा सकता है कि प्रथमतः ई" वर–चेतना नहीं है बल्कि प्रथमतः आत्म–चेतना है और बाद का हर वैचारिक विकास (जिसके अन्तर्गत ई" वर भाव भी आता है) मानव की अपनी प्राथमिक चेतना के अनुरूप बनायी हुई संरचना मात्र है। इस मूल बात को ध्यान में रखते हुए हमें सार्त्र की नास्तिकता पर विचार करना होगा। सार्त्र ने यह स्पश्ट करने को चेश्टा की है कि हम किस प्रकार ई" वर भाव तक पहुॅचते हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उनका कहना है कि ई" वर का भाव भी कुछ उसी ढ़ंग से बनता है, जिस ढ़ंग से अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति का आभास होता है। सार्त्र का कहना है कि अपने अस्तित्व की चेतना में ही व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों की दृश्टि की चेतना होती है। दरसल उसे यह प्रतीत होता है कि उसे भी देखा जा रहा है–" ाायद उसी ढ़ंग से देखा जा रहा है, जिस ढ़ंग से किसी भौतिक वस्तु को देखा जाता है। यह मैं और अन्य के संबंध की चेतना है। इस चेतना की प्रतीति यह है कि यदि अन्य व्यक्ति मेरे वातावरण के अंग है–यदि मेरे लिए है, तो मैं भी उनके वातावरण का अंग हूॅ ,उनके लिए हूॅ। यह व्यक्ति की चेतना का वि" लेशण है।

अस्तित्व भाव से पहले है (Existence Procedes Essence) :

ज्यॉ पाल सात्र की मूल अस्तित्ववादी उक्ति है कि **अस्तित्व भाव से पहले है**। इस कथन को इतना महत्व दिया गया है कि इतिहासकारों ने इसे अस्तित्ववादी विचार की मूल युक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। परन्तु सार्त्र ने इसकी व्याख्या अपने ढ़ंग से की है।सामान्य तौर पर हमारी प्रचलित धारणा यही है कि भाव (Essence) का स्थान अस्तित्व (Existence) से पहले आता है। उदाहरण के लिए किसी निर्माणकर्ता के मन में किसी चीज या वस्तु के निर्माण के पूर्व उसका भाव आता है, बाद में वस्तु का निर्माण संपादित होता है। जैसे मेज बनाने वाले कारपेन्टर के मन में मेज निर्माण के पूर्व मेज का भाव आ जाता है, बाद में वह उसका निर्माण करता है।

ज्यॉ पाल सार्त्र के भौक्षिक विचार (Educational Thoughts of Jean Paul Sartre) :

ज्यॉ पाल सात्र के शिक्षा दर्शन के केन्द्र में मनुश्य का अस्तित्व है। सार्त्र का दर्शन मुख्यतः मनुश्य के स्वतंत्रता, चयन,निरन्तर प्रयत्नशीलता, नियति का स्वयं नियन्ता, मूल्यों का निर्माता व व्याख्याता इत्यादि पर जोर डालता है। ज्यॉ पाल सात्र के भौक्षिक विचारों को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है–

1–शिक्षा के उद्दे" य : ज्यॉ पाल सात्र के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य इन अभिधारणाओं पर निर्भर करता है–

मनुश्य एक स्वतन्त्र प्राणी है, वह जो बनना चाहे उसके लिए वह स्वतंत्र है।

मनुश्य को चयन की स्वतंत्रता है।

मनुश्य को अपने चयन का पूरा दायित्व स्वयं उसका है।

ज्यॉ पाल सार्त्र के अनुसार ि" ाक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को स्वतंत्र मानव बना सके, जिससे वह अपने जीवन के संबंध में पराश्रित न रह कर स्वयं अपनी नियति का निर्धारण कर सके। प्रत्येक व्यक्ति को अपना लक्ष्य निर्धारित करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए और उस लक्ष्य की प्राप्ति के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

लिए व्यक्ति अपना मार्ग स्वयं निश्चित करे। सार्त्र के अनुसार चयनकर्ता का चयन प्रकिया के साथ तादात्म्य अनिवार्य है। अतः वह बालक के भावात्मक एवं सौन्दर्यात्मक पक्षों के विकास पर अधिक जोर डालता है। बालक की चयन प्रक्रिया किसी मार्गदर्शन से रहित, तर्करहित,प्रमाण रहित होनी चाहिए इसके बावजूद भी वह दायित्वयुक्त होनी चाहिए। ज्यॉ पाल सात्र के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख उद्दे" य बालक को जीवन के अनिवार्य सतत पीड़ा को सहन करने के लिए तैयार करना है, क्योंकि उसके लिए कोई आश्रय नहीं है, कोई सांत्वना देने वाला नहीं है। पीड़ा का भाग ही उसकी नियति है।

2–छात्र अवधारणा : सार्त्र का मानना है कि शिक्षा की समस्त प्रक्रिया में छात्र के अस्तित्व के बारे में सोचना चाहिए। छात्र केवल एक मानव है, जिसका इस संसार में न कोई मित्र है, न कोई दुश्मन और न कोई हितैशी। वह किसी समूह का अंग भी नहीं है। सार्त्र बालक की स्वतंत्रता का उद्घोशक है। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति केन्द्रित माना है। सार्त्र के अनुसार सामूहिक शिक्षा का कोई अस्तित्व है ही नही। बालक के अद्वितीय व्यक्तित्व की रक्षा करने के लिए यह आव" यक है कि इस पर सामाजिक स्वीकृति लादी न जाय, बल्कि उसे स्वयं व स्वतंत्र निर्णय के अवसर प्रदान करना आव" यक है।

3–शिक्षक अवधारणा : ज्यॉ पाल सात्र के अनुसार शिक्षक के लिए शिक्षा का दृश्टिकोण मृत्यु को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए। शिक्षक छात्रों में मृत्यु का सामना करने का दृश्टिकोण पैदा करता है। अभिप्राय यह कि शिक्षक के द्वारा विशय सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए जिससे कि उसमें निहित सत्य को स्वतंत्र साहचर्य द्वारा खोजा जा सके।

4–पाठ्यक्रम : ज्यॉ पाल सार्त्र के अनुसार सत्य अनन्त है। अतः कोई निश्चित पाठ्यक्रम निर्धारित करना संभव नहीं है। सार्त्र मानविकी (Humanities) विशयों को पाठ्यक्रम में सबसे प्रमुख स्थान देते हैं। वैज्ञानिक विशयों को ये संदेह की दृश्टि से देखते हैं। इनके अनुसार साहित्य का अध्ययन, सामाजिक विशयों, मानव संस्कृति संबंधी विशयों का समावेश एक पाठ्यक्रम को आदर्श बनाता है। ये सभी विशय वास्तविकताओं यथा दुःख, पीड़ा,व्यथा,प्रेम,घृणा आदि के प्रति भावनात्मक पक्ष का विकास करने में मुख्य रूप से सहायक होता है।

5–शिक्षण विधियॉ : ज्यॉ पाल सार्त्र के भौक्षिक दर्शन से यह स्पश्ट है कि शिक्षण विधियॉ पूर्णरूपेण व्यक्ति विशेश की योग्यताओं को विकसित करने वाली अर्थात व्यक्तिनिश्ट होनी चाहिए। इस दृश्टि से कार्य करके सीखना विधि को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। उनकी विचारधारा के अनुसार शिक्षण के उन ढ़ंगों को ही अधिक अपनाने पर बल देना चाहिए जो छात्रों के अन्दर बैठी हीन भावनायें दूर कर, उनमें स्वचेतना का भाव विकसित करें।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

6–अनु" ाासन : ज्यॉ पाल सार्त्र का शिक्षा–दर्शन बालक को अनुशासित करने के लिए किसी संरचित नियम–विधान को स्वीकार नहीं करता बल्कि उनके स्वतंत्रता की बात करता है। बालकों में स्वतंत्र निर्णय एवं क्षमता का विकास किया जाय ताकि उनमें वैयक्तिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो पाए। उस स्वतंत्रता की भावना से पनपने वाले नैतिक गुण से बेहतर कोई नैतिकता नहीं है।

ज्यॉ पाल सार्त्र के भौक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता (Relevance of Educational Philosophy of Jean Paul Sartre) :

ज्यॉ पाल सार्त्र का अस्तित्ववादी दर्शन शिक्षा के क्षेत्र में वैसे बहुत प्रासंगिक तो नहीं है। वैसे माना जाता है कि अस्तितववाद दर्शन न होकर मात्र दार्शनिक प्रवृति है। इसकी जटिलता इतनी व्यापक है कि शिक्षा के क्षेत्र में उससे निकलने वाले निहितार्थ अत्यन्त कम है। ज्यॉ पाल सार्त्र के दर्शन के आधार पर किसी संगठित विद्यालय की कल्पना नहीं की जा सकती है। विद्यालय संगठन का आधारभूत तत्व यह है कि समाज अपनी सांस्कृतिक धरोहर के रक्षण, हस्तान्तरण तथा विकास के लिए विद्यालयों की स्थापना करता है। समाज विद्यालयों की स्थापना इसलिए करता है कि समाज जिन मूल्यों को वांछनीय मानता है,उन्हें नई पीढी तक अनुप्रमाणित कर सके तथा युवा पीढी का सांस्कृतिकरण संभव हो सके। अतः सार्त्र का शिक्षाद" ान विद्यालय की संकल्पना के प्रति वि" वास नहीं रखता। लेकिन शिक्षा के अन्य पहलुओं पर ज्यॉ पाल सार्त्र का शिक्षाद" ान कमोवे" ा प्रासंगिक हो सकता है–

- प्रत्येक छात्र की रूचि एवं मानसिक स्तर के अनुरूप f" ाक्षा दी जानी चाहिए।
- छात्रों के अध्ययन विशय के चुनाव की स्वतन्त्रता उन्हीं पर छोड़ देनी चाहिए न कि विद्यालय या अभिभावक पर।
- छात्रों पर दबाव देकर भौक्षिक विशयों या भौक्षिक दायित्वों का अनुकरण नहीं कराना चाहिए, बल्कि व्यावहारिक पद्धति से उन्हें सिखाया जाना चाहिए।
- छात्रों के मानसिक," ाारीरिक व सामाजिक स्वतंत्रता पर नियन्त्रण कम किया जाना चाहिए।
- छात्रों को मूल्यों की f" ाक्षा के द्वारा भ्ाुभ और अ" ाुभ या सत् अथवा असत् की पहचान करने की f" ाक्षा दी जानी चाहिए।

निश्कर्श (Conclusion) :

बीसवीं सदी के सर्वाधिक चर्चित विचारक,लेखक और नाटककारों में से एक जॉन पाल सात्र को वैसे तो अस्तित्ववादी दार्शनिक के रूप में ज्यादे पहचान मिली हांलाकि कालान्तर में उन्होंने अपने आपको मार्क्सवादी घोशित कर लिया था। दरअसल सार्त्र एक दार्शनिक विचारक के अलावा इस सदी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के महॉन साहित्यकारों में से एक थे। उनके उपन्यासों और नाटकों ने पूरी दुनियां में व्यापक लोकप्रियता अर्जित की। वैसे तो सम्पूर्ण अस्तित्ववाद एक दा” िनक विचारधारा की तरह है, जिसमें समय–समय पर नये–नये विचार उभरे और मुख्यधारा में सम्मिलित हो गये। सार्त्र के विचार का केन्द्र–मानवअस्तित्व है, तथा उसका प्रारम्भिक बिन्दु अस्तित्व की प्रथम

सत्ता के तीन आयाम

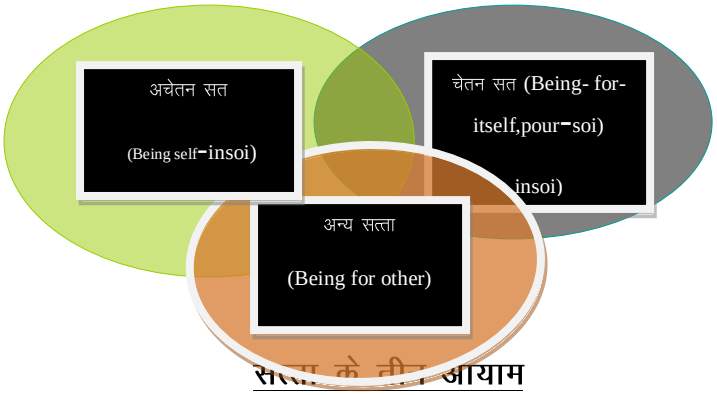

चेतना है। यह चेतना कोई सार्वभौम चेतना नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति की अपनी चेतना है। मानव की अस्तित्ववादी चेतना के वि” लेशण मे ही सत्ता के तीन आयाम स्पश्ट होते है। इन्हें सार्त्र अचेतन सत (Being self-insoi), चेतन सत (Being-for-itself,pour-soi) और अन्य सत्ता (Being for other) कहते हैं। उनके अनुसार मानव चेतन सत्ता (for-itself) है। इसकी विशिश्टताओं को स्पश्ट करने में उन्हे इस चेतन सत्त का अन्तर अचेतन सत्त से स्पश्ट करना पड़ता है, तथा यह भी स्पश्ट होता है कि अपने चारों ओर फैले अचेतन सत् की चेतना में किस प्रकार चेतन सत्–अर्थात अस्तित्ववान व्यक्ति के अस्तित्व का विकास होता है। मानव अस्तित्व के विकास के सन्दर्भ में अन्य सत्ता (Being-for-others) भी प्रासंगिक हो जाती है। शिक्षा की दृश्टि से उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक छात्र की रूचि एवं मानसिक स्तर के अनुरूप शिक्षा दी जानी चाहिए। छात्रों के अध्ययन विशय चुनाव की स्वतंत्रता उन्हीं पर छोड़ देनी चाहिए। छात्रों पर दबाव देकर शैक्षिक विशयों या शैक्षिक दायित्वों का अनुकरण नहीं कराना चाहिए। छात्रों की स्वतंत्रता पर नियन्त्रण कम किया जाना चाहिए। छात्रों को मूल्यों की ि” क्षा के द्वारा भ्राुभ और अ” ाुभ या सत् या असत् की पहचान करने की ि” क्षा दी जानी चाहिए।

सन्दर्भ साहित्य :

ओड, एल0के0 (1973) : शिक्षा की दा” िनक पृश्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर।
खेतान, प्रभा (1984) : सार्त्र का अस्तित्ववाद, सरस्वती विहार, दिल्ली।
खेतान, प्रभा (1985) : शब्दों का मसीहा, हिन्दी पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गुप्त, प्यारे लाल (1950) : फ्रॉस की राज्य क्रान्ति, तरूण भारती ग्रन्थावली, इलाहाबाद।
जोशी, शांति (1983) : अस्तित्ववादी दार्शनिक, किताब महल, इलाहाबाद।
दधीचि, महावीर (1986) : अस्तित्ववाद, रतन प्रकाशन मंदिर, बीकानेर।
पाण्डा, अ.कु. (2011) : शिक्षा दर्शन, साहित्य रत्नालय, कानपुर।
पाण्डेय, रामशकल (1989) : शिक्षा की दा" िनक एवं समाज" ाास्त्रीय पृश्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
मित्तल,एम.एल. (2008) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
मिश्र, नित्यानन्द (2017) : समकालीन पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
लाल, बसन्त कुमार (2012) : समकालीन पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
लाल, बसन्त कुमार (2016) : समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies